E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मण्डला एवं डिंडौरी जिले की भौगोलिक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विचारों का अध्ययन

डॉ. मीरा जैन

विभागाध्यक्ष

चित्रकला विभाग

शा.जे.सी.मिल, कन्या महाविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

केदार सिंह उलाड़ी

विषय–चित्रकला

जीवाजी

विश्वविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Received date

05/05/2026

Publishing Date

10/05/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.20659098

IMPACT FACTOR 5.924

शोध–प्रपत्र

मंडला और डिंडौरी जिले की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि अन्य जिलों से अलग है। यहां के अधिकतर लोग अपना जीवन साधारण तौर पर जीवन यापन करते है भौगोलिक परिवेश अन्य जिलों से अलग है इतिहास एवं संस्कृति में मौलिकता है, यहां के अधिकतर लोग अपनी संस्कृति से अलग है। गोंड जनजाति का इतिहास एवं संस्कृति अन्य जन जातियों को भिन्नता करती है, जिसमें परम्पराओं के साथ–साथ जीवन के मूल्य भी छिपे हुये है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। तथा प्रारंभ से ही वह जिज्ञासु रहा है, क्योंकि उसने प्रकृति को समझने एवं अपनी समस्याओं के समाधान के लिए सदैव सतत् प्रयास किए है।

गोंड पर्व मूल रूप से फसलों से संबंधित होने के कारण ये लोग किसी भी प्रकार की फसल चाहे वह कृषि प्रदत्त हो या प्रकृति प्रदत्त, उसका समारोहपूर्वक स्वागत करते हैं। वे उन्हें देवताओं का उपहार मानते हैं तथा उसके उपभोग का सामूहिक रूप से समारोह मानते हैं। गोंडजनों के अधिकांश पर्व नवभोज्या से संबंधित हैं। कहीं इन्हें भिन्न उपज के प्रथम बार उपयोग कहा गया है, कहीं 'नवाखाई' तो कहीं 'नवान्न' गोंड जनजाति में आम या इमली या अन्य किसी भी नये फल का प्रथम बार आहार समारोहपूर्वक किया जाता है।

''वास्तव में सभ्यता एवं संस्कृति का विकास मानवीय जिज्ञासा का परिणाम है, जिसके द्वारा वह अपने पर्यावरण को अनवरत रूप से समझने का प्रयास करता रहा है। आज प्रकृति को समझने तथा सामाजिक जीवन के बारे में नवीन ज्ञान प्राप्त करने के प्रयासों को ही अनुसंधान कहा जाने लगा है।''

गोंड जनजाति के अधिकांश त्यौहार फसल चक्र से संबंधित है। वैसे देखा जाये तो भारत के सम्पूर्ण त्योहार ही फसल चक्र से जुड़े हुए हैं। दीपावली तथा होली भारत के सबसे बड़े त्योहार है। दीपावली खरीफ की फसल के समारोहण का पर्व है तथा होली रबी की फसल के समारोहण का । भारत के त्योहार जहाँ एक और फसल चक्र से संबंधित हैं, वहीं वे ऋतुचक्र से भी जुड़े हुए हैं। ऋतुचक्र भी एक प्रकार से फसल चक्र की ही अभिव्यक्ति है । दोनो ही चक्र एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं।

मण्डला एवं डिण्डौरी के गोंड दीपावली की कार्तिक प्रतिपदा से कार्तिक पूर्णिमा तक पंद्रह दिन बड़ी धूमधाम से मड़ई का उत्सव मनाते हैं। वर्तमान में मड़ई मेले का पर्याय बन गई है, जिसकी तिथि या समय सुनिश्चित

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

नहीं है। वहाँ की गुड़ी के पुजारी के साथ मिलकर उस गाँव के लोग मड़ई का दिन निश्चित करते हैं। मड़ई शब्द की मड़वा से हुई है जो विवाह मण्डप का द्योतक है।

गोंड जनजाति का यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक उत्सव है। 'गोंड मान्यताओं के अनुसार उनके गुरू दौगुन का विवाह एक मण्डप तले गंगाइन देवी क साथ दीपावली प्रतिपदा को हुआ था, तब से उसी की स्मृति में यह उत्सव मड़ई के नाम से मनाया जाता है। मड़ई में मण्डप बनाकर आज भी दौगुन गुरू और गंगाइन का विवाह रचाया जाता है।' **मड़ई बांधने को चण्डी खड़ा करना कहते हैं। मड़ई के अवसर पर मेले लगते हैं। इन मेलों में अनेक चण्डी दल सम्मिलित होते हैं। चण्डीदल आपस में मिलते हैं चण्डियों का विसर्जन पूर्णिमा को किया जाता है।''**

करमा त्योहार मध्यवर्ती भारत के जनतजातियों का सबसे प्रमुख त्योहार है। यह पर्व भादों मास में मनाया जाता है। कर्मा कर्म का प्रतीक है। करमा के विषय में अलग-अलग क्षेत्रों में कई एक मिथक प्रचलित हैं। कर्मा गोंड जनजाति को एक महत्वपूर्ण त्योहार है, यह बात इस तथ्य से ही सिद्ध हो जाती है कि उनकी वाचिक परंपरा में सर्वाधिक गीत करमा के ही हैं। करमा नृत्य भी अत्यन्त लालित्यपूर्ण हैं और वे करमा एक अनुष्ठानिक आयोजन है, इसके प्रतीक स्वरूप जंगल से करम वृक्ष की एक शाखा को काटकर लाते हैं। करम वृक्ष लेने के लिए गाँव के बुजुर्ग तथा युवक बैगा के साथ जंगल में जाते हैं। बैगा विचार करके वृक्ष की पहचान करता है। फिर उस वृक्ष पर हल्दी कुमकुम का तिलक लगाकर तथा चावल छिड़क कर वृक्ष एक बड़ी शाखा को काटते हैं। फिर गाजे बाजे के साथ उसे गाँव के अखाड़े (नृत्य स्थल/आयोजन स्थल)पर लेकर आते हैं।

''ज्ञान की अन्य शाखाओं (विज्ञानों) के मध्य भूगोल की स्थिति को तार्किक समीक्षा करते हुए प्रसिद्ध जर्मन भूगोल वेत्ता हेटनर (1905) ने लिखा है कि ''वास्तविकता त्रिविमीय (Three dimensional) विन्यास है जिसे पूर्णरूपेण समझने के लिए हमें तीन दृष्टि बिन्दुओं से निरीक्षण करना चाहिए। इनमें से किसी भी एक बिन्दु वाला निरीक्षण एक पक्षीय ही होगा और वह सम्पूर्ण को प्रदर्शित नहीं करेगा''

एक बिन्दु से हम सदृश्य, वस्तुओं सम्बंध देखते है। दूसरे से काल के संदर्भ में उनके विकास का और तीसरे क्रम से क्षेत्रीय संदर्भ में उनके क्रम औरवर्गीकरण का निरीक्षण करते है। इस प्रकार प्रथम वर्ग के अन्तर्गत वर्गीकृत विज्ञान द्वितीय वर्ग में ऐतिहासिक और तृतीय वर्ग में क्षेत्रीय या स्थान सम्बंधी विज्ञान आते है (लेखराज सिंह 1972) वर्गीकृत विज्ञान तत्वों कि व्याख्या करते है। अतः इन्हें तत्व विज्ञान भी कहा जाता है। प्रकति के अनुसार इन्हें प्राकृतिक और सांस्कृतिक (मानवीय) विज्ञान के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। ऐतिहासिक विज्ञान काल या समय ;जपउमद्ध के सर्न्दभ में तत्वों, घटनाओं या क्षेत्रों के विकास-क्रम की व्याख्या करते है। क्षेत्रीय विज्ञान तत्वों या घटनाओं का विश्लेषण स्थान के सर्न्दभ में करते है।

भूगोल भूलतः एक स्थानीय विज्ञान है जो भूतल पर स्थानान्तरण से पाई जाने वाली विभिन्नताओं का वैज्ञानिक वर्णन एवं विश्लेषण कर्ता है। मध्यप्रदेश के मण्डला डिण्डौरी जिले की भोगोलिक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अन्य जिले से अलग है।भूगोल का निर्माण मानव के पूर्व है, जिसका वर्णन भूगोल वेता ने अलग-अलग प्रारूपों में किया है। भूगोल की प्रकृति का सम्बंध पहाड़, पठार, नदियां, जलवायु, वन, वन्यजीव, जैव विविधता, एवं मृदा, इन सबको मिलाकर भूमिकृति का निर्माण होता है मानव और पर्वत का आदिकाल से सम्बंध है।

मानव जीवन पर स्थलाकृतियों का प्रभाव किसी से छिपा नहीं है। पर्वत, पठार, और मैदान स्थल के वृहत, रूप हैं जो मानव के भोजन और निवास के साथ ही उसके सहन-सहन, व्यवसाय, संस्कृति आदि को भी प्रभावित करते है। ऊँचे- नीचे तथा विषय धरातल के कारण पर्वतीय तथा पहाड़ी भाग मानव निवास के लिए

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कम उपयोगी होते है, क्योंकि वहां यातायात के साधनों, बड़े उद्योग, धन्धों, एवं नगरों आदि का विकास होता है।

''समतल भूमि तथा उपजाऊ मिट्टी के अभाव के कारण कृषि भी विकसित नही हो पाती है पठारी भूभाग पर्वतीय भागों की तुलना में अधिक उपयुक्त होते है, क्योंकि पहाड़ी असुविधाएँ पठारों पर प्रायः नहीं होती है, किन्तु मानव निवास तथा आर्थिक, सामाजिक, एवं राजनीतिक विकास की दृष्टि से मैदान सर्वाधिक उपयुक्त माने जाते है। यहाँ समतल भूमि तथा उपजाऊ मिट्टी उपलब्ध होती है जिसके फलस्वरूप वातावरण के स्थलीय साधनों, कृषि, उद्योग धन्धों, पशुपालन आदि का विकास करना सर्वाधिक सुगम होता है। अग्रिम पंक्तियों में पर्वतीय क्षेत्र, मैदान तथा पठार से मानव वर्गों के संबंधों का पृथक-पृथक विश्लेषण किया गया है।''

इस नृत्य के साथ गाए जाने वाले अधिकांश गीत श्रृँगारिक हैं। नृत्य के साथ एक या दो वादक मांदर बजाते हैं। मांदर एक प्रकार का ताल वाद्य है, जो मिट्टी से बना होता है तथा उसे कुम्हार बनाते हैं । इसकी लंबाई लगभग पाँच फीट होती है तथा इसका एक सिरा चौड़ा तथा दूसरा सँकरा होता है। मांदर मृदंग का ही एक रूप है जो आकार में उससे बड़ा होता है तथा मणिपुरी वाद्य खोल से थोड़ा छोटा होता है।

''जंवारा एक धार्मिक आयोजन है, जिसका वर्ष में दो बार आयोजन होता है। एक क्वार माह में तथा दूसरा चैत्र माह में मनाया जाता है। क्वार माह में शुक्ल पक्ष की एकम तिथि से नवमीं तक तथा चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की एकम से नवमीं तक जंवारा त्योहार मनाते हैं। यह पर्व शक्ति पूजा का पर्व है। गोंड जनजाति शक्ति की उपासक है तथा उनके देवलोक में मातृषक्तियों की प्रधानता है। दोनों जंवारा पर्व नौ दिनों तक चलते हैं। त्योहार के पहले दिन जंवारा बोते हैं। बाँस की टोकरी में मिट्टी भरकर गेहूँ के बीज बो देते हैं। कुछ स्थानों पर देवी की गुड़ी या मड़िया में ही कुछ भूमि साफ करके उसमें बीज बो देते हैं।

गोंड जनजाति में अनेक अनुष्ठानों को आवश्यक माना जाता है। बीजों को जागृत करने के अनुष्ठानों का उल्लेख पूर्व में हो चुका है। उनके अधिकांश पर्व विभिन्न अनुष्ठानों से संबंधित हैं तथा उन अवसरों पर किये जाने वाले नृत्य तथा गायन उनकी अभिव्यक्ति यो समारोहण के प्रतीक हैं। पराशक्तियों तथा जादू-टोने में उनका अटूट विश्वास है। उत्पत्ति तथा प्रजनन संबंधित अनुष्ठान जादू में उनके अटूट विश्वास के विषय हैं। मध्यवर्ती भारत की अनेक जनजातियों में जादू - टोने पर विश्वास है। गोंड जनजाति भी जादू-टोने पर विश्वास करती है। वास्तव में इस विश्वास का उद्गम सभ्यता के विकास के आंरभिक काल में पराशक्तियों में विश्वास के साथ ही उत्पन्न हुआ है। मानव जब आदिम अवस्था में था तो उसे जीवन में अनेक कठिनाईयों से संघर्ष करना पड़ता था। जीवन अत्यन्त कठिन था और आजीविका हेतु आखेट पर ही निर्भर रहना पड़ता था। प्रकृति की शक्तियों की विभीषिका आखेट में विफलता, रोग तथा महामारी तथा कबीलाई संघर्षों आदि जैसी स्थितियों ने भय के कारण आदिम चेतना में पराशक्तियों के अस्तित्व की कल्पना को जन्म दिया।

कालान्तर में प्रकृति की शक्तियों का मानवीकरण हुआ तथा उन्हें अपने अनुकूल बनाने के लिए उनकी पूजा-आराधना होने लगी। कष्टों का कारण प्रतिकूल दुष्ट पराशक्तियों के कोप को माना जाने लगा। उनके शमन हेतु ही जादू-टोन्हे का आविर्भाव हुआ। दुष्ट आत्माओं की कुदृष्टि रूष्ट-असंतुष्ट देवी-देवताओं का कोप इन कष्टों -रोगों तथा महामारियों का कारण माना जाने लगा। सर सी. ग्रान्ट ने 1871 में सी. पी. गजेटियर में गोंडजाति में प्रचलित जादू-टोन्हे के विषय में इस प्रकार उल्लेख किया है- वनाच्छादित पर्वतीय प्रदेश जो मण्डला एवं डिण्डौरी से आरंभ होकर पूर्वी समुद्र तट तक विस्तृत है, वह टोन्हियों से परिपूर्ण है।

यहाँ कोई भी समझदार व्यक्ति अपनी पुत्री का विवाह तब तक नहीं करना चाहेगा, जब तक कि उस परिवार के सदस्यों में कोई एक व्यक्ति खतरनाक बाह्य सम्बन्ध रखने वाला न हो। दुरात्माओं की कुदुष्टि जो एक अनार्य विश्वास है, वह इस बीहड़ क्षेत्र में विजयी लोगों को एक भयभीत करने वाले ऐसे तन्त्र का काम

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

करती है, जिसका दुष्प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है। मण्डला एवं डिण्डौरी के पर्वतीय क्षेत्र में ऐसी अनेक कन्दराएँ हैं, जहाँ निर्भीक से निर्भीक बैगा भी वहाँ रहने वाली शैतानी शक्तियों से भय खाते हैं। जादू-टोन्हे के प्रति विश्वास के पहले की अपेक्षा अब उसमें कभी होने लगी है।

इस क्षेत्र में पानी की कमी या दूषित जल के कारण कभी-कभी हैजा जैसी महामारी फैलने पर गाँवों में भगदड़ मच जाती है और गाँव के गाँव खाली हो जाते हैं। यहाँ तक कि वृद्धजनों को उनके निकट सम्बंधी भी उन्हें मरने के लिए गाँव में ही छोड़कर जंगलों में भाग जाते हैं और किसी प्रकार से कंदमूल फल खाकर तब तक वहाँ रहते हैं, जब तक कि महामारी समाप्त न हो जाए। इस महामारी के लिए वे जिस किसी भी व्यक्ति को उत्तरदायी मानते हैं, उसे मृत्युदण्ड दिया जाता है। दुर्भाग्यवश इस प्रकार के तर्कहीन आंतक के कारण लोगों की हत्या के अनेक प्रकरण 'सेंट्रल प्रॉविन्स' के पुलिस रिकार्डो में दर्ज हैं। **हैजा या प्लेग फैला तो गोंड उससे इतने आतंकित हो उठे कि वे अपनी कुल्हाड़ियों से उन सभी सरकारी कर्मचारियों पर आक्रमण करने लगे थे, जो भी उनके गाँवों में आते थे। उनकी ऐसी धारणा बन गई थी कि वे प्लेग का टीका लगाकर प्लेग फैलाने आते हैं। शासन ने स्कूलों के शिक्षकों के उपरान्त गोंड टीका लगवाने के लिए स्वेच्छा से सहमत होने लगे और ऐसा इस सभव हुआ, जब प्लेग समाप्त हो गया।**

''**वेरियर एल्विन** ने मण्डला एवं डिण्डौरी क्षेत्र से जादू-टोन्हे की उत्पत्ति से सम्बंधित एक मिथकथा का संग्रह किया है। इस कथा के अनुसार 'दौगुन गुरू तथा राना टोन्ही' लंकागढ़ में निवास करते थे। उन्होंने विचार किया इस प्रकार जीने का क्या अर्थ है? हमारे शिष्य होने चाहिए।' राना ने अपने दाहिनी ओर के अंग के मैल से तीन शिष्य उत्पन्न किये- सुकरी नैता धोबिन, लोहकाट लोहारिन। दौगुन गुरू ने निन्धान गुरू, मुरहा कंवर, रून्हा गुरू तथा उस्ताज गुरू उत्पन्न किये। उन दोनों ने अपने शिष्य तथा शिष्याओं को अपनी विद्या का कुछ अंश सिखाया।

जादू तथा टोन्हाई कर्म के सम्बंध में कुछ गुरूओं का नाम अनेक बार मिथकों तथा मंत्रों में आता है। इनमें दौगुन गुरू तथा उसकी पत्नी गंडियन, झापा गुरू, कवल गुरू, धांगर गुरू, जंघादेवार, राना टोन्ही, सुकरी, नैता धोबनी, लोहकाट लोहारिन, नंगा बैगा तथा नंगी बैगिन, गुरू गोरखनाथ, जालंधर गुरू, बिजलोकिन कन्या, मारा क्षत्री, नकटी पाट, करूला पाट, आदि नाम अनेक बार सुनने को मिलते हैं। **गोंडजनों में गोदना प्रथा व्यापक रूप में विद्यमान है। संपूर्ण गोंडवाना में गोंड स्त्रियाँ अपने अंगों पर विभिन्न गणचिन्हों में भिन्नता पाई जाती है। इनकी मान्यता है कि वे इन गोदना गणचिन्हों को अपने शरीर में इसलिये स्थापित करते हैं, ताकि ये गणचिन्ह जादू-टोन्हे से इनकी रक्षा करते है।''**

'धर्म, मिथक तथा देवलोक आपस में आपस में इतने अधिक गुंपित हैं कि उन्हें एक दूसरे से पृथक करना संभव नहीं है और न ही उनका विच्छेद करके अध्ययन ही किया जा सकता है। उत्पत्ति सम्बंधी कथाओं, प्रकृति की शक्तियों के प्रति दैवीय मान्यता तथा अन्य जातियों के धर्म से संपर्क आदि ये सभी तत्व किसी भी जनजाति के देवलोक को प्रभावित करते हैं। प्रसिद्ध मानवशास्त्री ई.बी. टाइटलर ने धर्म की अल्पमत परिभाषा आध्यात्मिक प्राणियों में विश्वास बतायी है। उन्होंने बद्धमूल सिद्धान्त के लिए 'सर्वजीवत्ववाद' शब्द का प्रयोग किया है।

गोंड जनजाति के गीतों के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के वाद्य बजाये जाते हैं, जिनसे भिन्न-भिन्न प्रकार की लय, ताल एवं ध्वनियाँ निकलती हैं। इन्हें बजाने वाले भी अलग-अलग वादक होते हैं। विशेष तथ्य यह है कि गोंड समाज में ही कभी-कभी कोई ऐसा वादक पैदा हो जाता है, जिसे सभी वाद्य बजाने की महारथ हासिल हो जाती है। हालाँकि ऐसे वादक बिरले ही मिलते हैं। वास्तव में वाद्य गीतों के प्राण होते हैं। गीत गायन में उतार-चढ़ाव, ठहराव, गति आदि का नियंत्रण वाद्यों की वादन शैली से ही होता हैं। गोंड जनजाति

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

के लोग वाद्यों का उपयोग आंचलिक मूल्यों, मान्यताओं, लोक विश्वासों, रीति-रिवाजों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के आधार पर करते हैं।

गोंड और बैगा अपने परम्परिक जीवन में मदिरा का सेवन करते है गोंड लोग महुआ से शराब बनाते है, परन्तु वर्तमान में महुआ धीरे-धीरे समाप्त होने के कारण उसका स्थान दूसरे पदार्थो ने ले लिया है, जैसे नौसागर एवं युरिया के द्वारा मदिरा बनाई जा रही है, जिसको विभिन्न पर्वों में एवं लोक पर्वों पर मदिरा सेवन करता है। मंडला एवं डिंडौरी के विशेष रूप से युवा वर्ग मंदिरा के अलावा और की कई प्रकार के नशा कर रहा है स्मेक, चरस, कोकीन, गांजा का भांग एवं एम.एस.डी प्रयोग कर रहा है।

संदर्भ सूची

1. पुरोहित अर्चना, भूगोल में शोध प्रविधि, इन्दौर एकेदमी भोपाल संस्करण 2019, पृ. 01
2. महावर निरंजन, समग्र गोंड जनजातीय सांस्कृतिक अध्ययन, आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास संस्कृति भोपाल, संस्करण 2018, पृ. 162
3. मौर्य एस डी, भूगोल परिचय, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद संस्करण, 2007, पृ. 1
4. मौर्य एस डी, भूगोल परिचय, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद, संस्करण, 2007, पृ. 70
5. महावर निरंजन, समग्र गोंड जनजातीय सांस्कृतिक अध्ययन, आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास संस्कृति भोपाल, संस्करण 2018, पृ. 188
6. महावर निरंजन, समग्र गोंड जनजातीय सांस्कृतिक अध्ययन, आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास संस्कृति भोपाल, संस्करण 2018, पृ. 195